सूत्रपात

वार्षिक पत्रिका

अंक-11

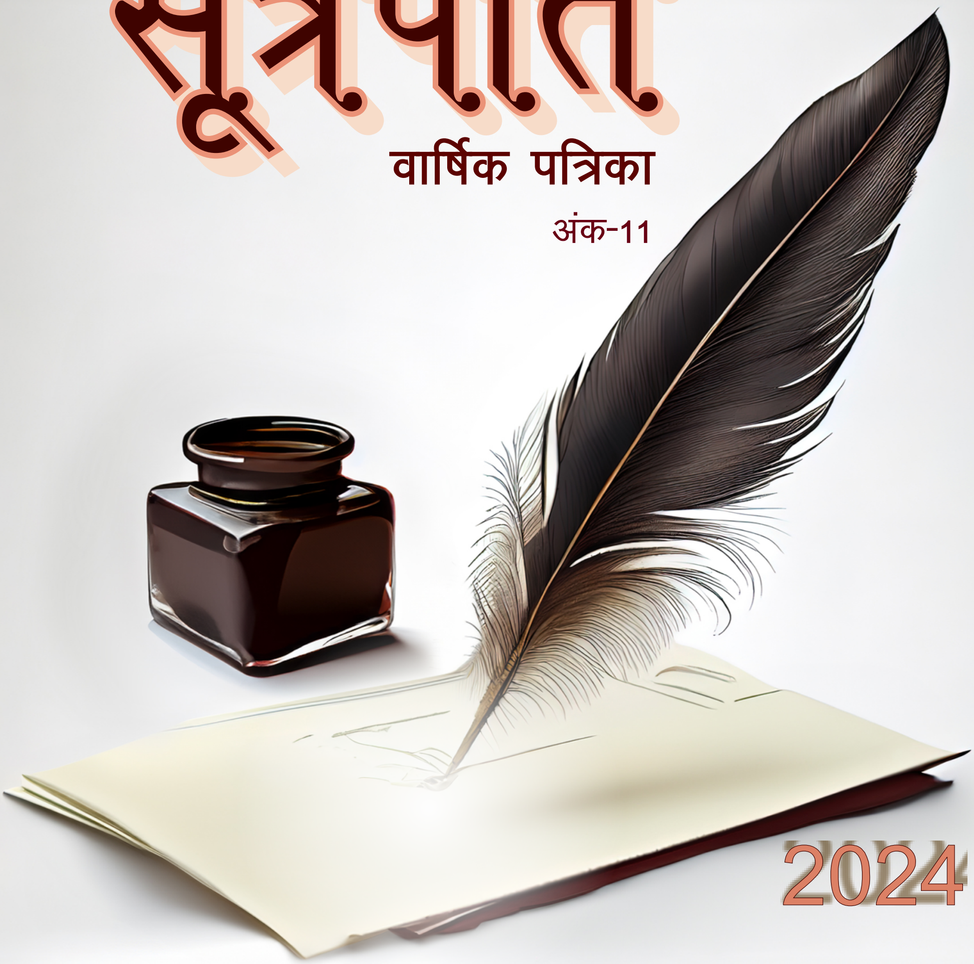

2024

प्रगत संगणन विकास केन्द्र, मोहाली

सी-डैक मोहाली

वार्षिक गृह पत्रिका – 2024
अंक – 11

इस अंक में

सन्देश

श्री वी. के. शर्मा

केंद्र प्रमुख एवं अध्यक्ष

(राजभाषा कार्यान्वयन समिति)

सम्पादकीय

डॉ. सुनीत मदान

संपादक मंडल

श्री कुलदीप कुमार द्विवेदी

श्री शैलेश सिंह

सुश्री अनु आहूजा

श्री राज कुमार

सहयोग

सुश्री प्रीतिका

निःशुल्क वितरण के लिए

नोटः प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक एवं सूत्रपात संपादक मंडल की पूर्व अनुमति आवश्यक है।
सूत्रपात में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण लेखक के अपने हैं ।
संपादक मंडल का सबसे सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

गृह पत्रिका – अंक 11

अनुक्रम

क्रमांक	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1	संदेश	1
2	सम्पादक की कलम से	2
3	आदतें–ज़िन्दगी के साथ भी, ज़िन्दगी के बाद भी	3
4	सुपात्र	7
5	सच्चा इंसान	8
6	बौद्धिक सम्पदा प्रबंधन	9
7	माँ	12
8	शहरीकरण के परिणाम	13
9	शहरीकरण के परिणाम	17
10	प्राकृतिक आपदाएं – मेरे विचार	20
11	मोबाइल का जीवन पर प्रभाव	22
12	मैने जाना........मैं क्या चाहता!	25
13	विश्व गुरू की संज्ञा में	26
14	हमारा सी–डैक	27
15	वीर तुम कहलाओगे, जवान तुम कहलाओगे	28
16	राष्ट्रीय हिन्दी दिवस	29
17	माघ की सर्दी में	30
18	एकल उपयोगी प्लास्टिक का उन्मूलन	31
19	मेरी प्यारी हिन्दी	34
20	मैं और मेरी माँ	35
21	कृष्ण, राधा, मीरा	36
22	जीवन भी एक गणित है	37

संदेश

सी – डैक मोहाली की हिंदी गृह पत्रिका ''सूत्रपात'' के 11 वें अंक को आप सब के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। पत्रिका हमें अपने विचार, भाव, दृष्टिकोण एवं सृजनात्मकता को अभिव्यक्त करने का मंच प्रदान करती है। किसी भी भाषा के प्रचार–प्रसार में पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह भारतीय जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं सभ्यता की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है जो हमारे पारम्परिक ज्ञान और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु भी है। सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिंदी विश्व की संभवतः सबसे उपयुक्त वैज्ञानिक भाषा है। भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का अधिकाधिक उपयोग सुनिश्चित करने हेतु उठाए गए कदमों के परिणामस्वरूप हिंदी में कार्य करना सुविधाजनक हो गया है। सूचना प्रौद्योगिकी में भी हिन्दी का प्रयोग बढ़ रहा है।

''सूत्रपात'' का प्रकाशन भी हमारा इसी दिशा में एक सार्थक प्रयास है और हमें गर्व है कि इसके माध्यम से हम राजभाषा हिन्दी के प्रति अपने कर्तव्य और सम्मान को एक मूर्त रूप देने का प्रयास कर रहे हैं। राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन के क्षेत्र में अभी तक आप सभी का प्रयास एवं सहयोग अत्यंत सराहनीय रहा है और मुझे यह पूर्ण आशा है कि आप सभी यह प्रयास आगे भी जारी रखेंगे और कार्यालय के कार्यों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को और अधिक बढ़ाने का प्रयास करेंगे। इस कार्य में सभी की सक्रिय सहभागिता एवं सहयोग की आवश्यकता होगी।

'सूत्रपात' के इस अंक के सफल प्रकाशन के लिए मैं संपादक मण्डल एवं सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ जिन्होंने इस पत्रिका को रोचक और रचनात्मक बनाने के लिए विषय–विविधता लाने का प्रयास किया है ताकि इसका आनंद सभी वर्ग के पाठक ले सकें। इस पत्रिका के निरंतर सफल प्रकाशन हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ देते हुए यह अपेक्षा करता हूँ कि आप सभी के सामूहिक एवं सार्थक प्रयासों से 'सूत्रपात' नित नई ऊँचाइयों को प्राप्त करे। आपकी प्रतिक्रियाओं एवं सुझावों की हमें प्रतीक्षा रहेगी ताकि पत्रिका के आगामी अंक को और भी अधिक रोचक एवं रचनात्मक बनाया जा सके ।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ.......

वी. के. शर्मा
केंद्र प्रमुख
सी–डैक, मोहाली

सम्पादक की कलम से

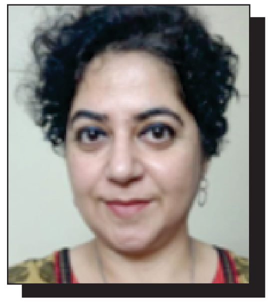

सी–डैक, मोहाली की वार्षिक गृह पत्रिका सूत्रपात 2024 संस्करण को प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। मैं उन सभी सहयोगियों और सम्पादक मंडल का आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने इस वार्षिक गृह पत्रिका के प्रकाशन में अपना सहयोग दिया। इस पत्रिका में अधिकारियों एवं कर्मचारियों के अलावा उनके पारिवारिक सदस्यों ने भी अपने लेखों, कविताओं, चित्रों आदि के माध्यम से बहुमूल्य योगदान दिया है, जिसमें उनका स्नेह, उनकी हिन्दी के प्रति निष्ठा एवं रचनाधर्मिता का आभास होता है। मैं उनके इस स्नेह के लिए भी आभार प्रकट करती हूँ कि उन्होंने हमारे इस संस्करण के लिए अपना बहुमूल्य समय दिया।

पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाओं को आमूल–चूल परिवर्तन के साथ यथावत रखने का प्रयास किया है ताकि हमारे पाठकों को पढ़ने एवं समझने में कोई कठिनाई न हो।

हिन्दी एक अद्भुत विलक्षण क्षमता वाली भाषा है जिसके मूल में विश्व की सबसे प्राचीन भाषा संस्कृत है तथा भारत की तमाम क्षेत्रीय भाषाएँ इसकी ताकत हैं। आज विश्व में बोली जाने वाली सभी भाषाओं में हिन्दी का प्रथम स्थान है। भारत सरकार अपने कार्यालयों में हिन्दी के अधिकतम प्रयोग पर जोर दे रही है।

सी–डैक मोहाली राजभाषा समिति का हमेशा यही प्रयत्न रहता है कि कार्यालय के सभी अनुभागों के दैनिक कार्यों में अधिक से अधिक हिन्दी का प्रयोग हो।

मैं उम्मीद करती हूँ कि आप सभी को "सूत्रपात" 2024 का यह अंक हमेशा की तरह बहुत पसंद आएगा तथा भविष्य में भी पत्रिका के लिए अपने संकलन एवं इसके सुधार के लिए निरंतर सुझाव देते रहेंगे।

अन्ततः मैं अध्यक्ष, हिन्दी समिति, का आभार प्रकट करना चाहती हूँ जिन्होंने इस पत्रिका के प्रकाशन में गहरी रूचि दिखाते हुए अपना बहुमूल्य मार्गदर्शन एवं भरपूर समर्थन दिया।

डा. सुनीत मदान
उपाध्यक्षः कार्यालय राजभाषा समिति

आदतें – ज़िन्दगी के साथ भी, ज़िन्दगी के बाद भी

मनुष्य आदतों का पुतला है। आदतें ज़िन्दगी के साथ इसलिए हैं क्योंकि यही हमारे जीवन की दिशा एवं दशा को निर्धारित करती हैं और ज़िन्दगी के बाद इसलिए क्योंकि यही आदतें हमारे बच्चों में हस्तान्तरित हो जाती हैं तथा उनके जीवन की दिशा एवं दशा का निर्धारण करती हैं। अतः हम में सही आदतों का होना अति आवश्यक है। अपनी आदतों को जाँचने का एक बड़ा सरल पैमाना है जो इस प्रकार है...

ऐसी कोई भी आदत जो आप अपने बच्चों में नहीं देखना चाहते, वह आप में नहीं होनी चाहिए। कोशिश करें कि बच्चों को कोई हिदायत या नसीहत देने से पहले खुद की जाँच कर लें कि क्या आप उन्हें नसीहत देने के हकदार हैं ? आप अपनी आदतों को उस पैमाने से परख कर देखें ।

हम बच्चों को जन्म तो देते हैं परन्तु शायद ज़िन्दगी की भाग–दौड़ में उनका सही पालन पोषण करना भूल जाते हैं। सही पालन – पोषण का अर्थ महंगी शिक्षा, महंगे कपड़े, महंगे शौक और महंगे खिलौने उपलब्ध करवाने से नहीं बल्कि अच्छी आदतों से भी है। मेरे विचार में जिस प्रकार हम अपनी सारी सम्पत्ति तथा देनदारी अपने बच्चों के लिए छोड़ जाते हैं उसी प्रकार जाने–अनजाने हम अपनी सारी आदतें अपने बच्चों में डाल देते हैं। शायद हमें इस बात का एहसास भी नहीं होता और अगर होता भी है तो देर से होता है। आदतें संस्कार का एक हिस्सा हैं। इसलिए बच्चों में अच्छी आदतें संस्कार के तौर पर डालें ।

बच्चे वह नहीं करते जो आप उनसे करने के लिए कहते हैं। वे वही करते हैं जो आप को करते हुए देखते हैं। अतः अपने आचरण पर ध्यान दें। उनके सामने श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करें तथा कुछ गैर ज़रूरी आदतों का बलिदान करने को तैयार रहे।

''प्रत्येक सीढ़ी चढ़ने से सीढ़ी बनती है, उसके पहले वह सिर्फ पत्थर होती है। जब तक कोई उस पर चढ़ता नहीं तब तक उसे सीढ़ी नहीं कहा जा सकता है। वह चढ़ने से ही सीढ़ी बनती है। कुछ नासमझ सीढ़ियों को भी पत्थर बना लेते हैं और कुछ समझदार पत्थरों पर भी चढ़ते हैं और उनको सीढ़ियाँ बना लेते हैं।''

आदतों के गुलाम

बन्दर को पकड़ने के लिए मदारी एक पंजे के आकार का छोटा सा पिंजरा जंगल में रख देते हैं जिसमें कुछ मूंगफली के दाने पड़े होते हैं। बन्दर मूंगफली के लालच में पेड़ से उतर कर आता है और जैसे ही मूंगफली उठाने के लिए हाथ पिंजरे में डालता है, वह बन्द हो जाता है तथा बन्दर का हाथ उसमें फँस जाता है। परन्तु उस पिंजरे का छेद

इतना ज़रूर खुला होता है कि यदि बन्दर हाथ में पकड़ी हुई मूंगफली छोड़ दे तो हाथ सीधा कर के बाहर निकाल सकता है। परन्तु बन्दर मूंगफली को नहीं छोड़ता और वहीं फँसा रह जाता है। जब भी मैं यह किस्सा अपने सेमिनार में सुनाता हूँ तो लोग बन्दर की बेवकूफी पर तरस खाते हैं। बन्दर तो फिर भी जानवर है। उसमें इतनी विवेक शक्ति नहीं कि वह लालच, अच्छा–बुरा समझ सके। परन्तु हम अपने आप को सबसे अकलमंद प्राणी मानते हैं फिर भी कभी–कभी बन्दर जैसा व्यवहार करते हैं। उदाहरण के तौर पर हम सब जानते हैं कि सिगरेट, गुटखा, शराब आदि बुरी चीज़ें है, इनसे सेहत का नुकसान होता है जो हमारे परिवार के लिए भयंकर मुसीबत पैदा कर सकती हैं। फिर भी बन्दर की तरह उन आदतों को पकड़े रहते हैं तथा स्वास्थ्य एवं खुशहाली रूपी फलों से दूर हो जाते हैं।

हमें चाहिए कि हम जागें एवं अपनी आदतों के प्रति जागरूक हों। कोई भी चीज़ कल पर न छोड़ें और उसे अभी करें। यही आदतें हम अपने बच्चों को सौगात के रूप में देते हैं। क्या कोई माता–पिता अपने बच्चे को सड़ा हुआ सेब देना पसन्द करेंगे? यदि नहीं तो फिर हम बच्चों को गलत आदतें क्यों दें।

लोग बच्चों के भविष्य की सुरक्षा के प्रति आजकल बहुत जागरूक हैं। वे तरह–तरह की जीवन बीमा योजनाएं लेते हैं। यह बहुत अच्छी बात है परन्तु यदि आप उनका भविष्य हकीकत में सुरक्षित बनाना चाहते हैं तो उन्हें अच्छी आदतों की सौगात दें। उन्हें लक्ष्य बनाना तथा हासिल करना सिखाएं, टालना नहीं। और इस सब की शुरूआत स्वयं का उदाहरण बन कर देनी होगी न कि भाषण देकर या डाँट कर ।

<u>हाथी की मानसिकता</u>

मैंने एक बार पेड़ के तने से एक विशाल हाथी बंधा हुआ देखा जिसकी रस्सी बहुत ही पतली थी। जब मेरी नज़र उस हाथी पर गई तो दिमाग में यह सवाल उठा कि इतना विशाल एवं ताकतवर होने के बावजूद यह हाथी इतनी पतली सी रस्सी से मजबूर होकर क्यों बंधा है। मुझे पूरा यकीन था कि यदि हाथी चाहे तो वह रस्सी तोड़ सकता है परन्तु फिर तोड़ता क्यों नहीं। मैंने अपनी इस उत्सुकता को शांत करने के लए हाथी के महावत से पूछा, ''भाई साहब, इस चमत्कार का क्या राज़ है ? कैसे आप इतने बड़े हाथी को काबू में रखते हैं ? क्या यह छूटने की कोशिश नहीं करता?'' वह बोला, ''छूटने की इसने बहुत कोशिश की थी जब यह छोटा था। हम लोग इसे तब मोटी–मोटी लोहे की ज़ंजीरों से बाँधते थे। परन्तु लाख कोशिश करने पर भी यह छूट नहीं पाता था। धीरे–धीरे इसने प्रयास करना कम कर दिया और आखिर में बिल्कुल ही बन्द कर दिया। अब रस्सी तो कमजोर है, पर इसे लगता है यह भी नहीं टूटेगी और बंधे खड़े रहता है। '' उसका जवाब सुनकर मेरे दिमाग में जैसे बिजली सी कौंध गई। मुझे एहसास हुआ कि कहीं हम लोगों की भी मानसिकता इस हाथी की तरह तो नहीं हो गई। हम भी तो अपनी गलत आदतों के साथ बंधे पड़े रहते हैं और सोचते हैं कि इनका टूटना मुश्किल है। ऐसे ही कई लोगों का कहना है कि '' मैं सिगरेट छोड़ना चाहता हूँ पर छूटती नहीं या मैं सुबह जल्दी उठना चाहता हूँ पर उठ नहीं पाता ।'' यह वाक्य सुन कर मुझे उस हाथी की याद आती है जो इन्हीं गलत विचारों का गुलाम बन कर सारी ज़िन्दगी एक मामूली सी रस्सी से बंधे – बंधे गुज़ार देता है।

काम करने वालों के लिए काम कभी खत्म नहीं होता, हमेशा एक नया काम तैयार रहता है।

जीवन में 'पड़ता है' के स्थान पर 'चाहता हूँ' पर अमल करें

मुझे लगता है कुछ लोग काम पर जाने में खुशी महसूस करते है तथा कुछ लोगों को काम पर जाना अच्छा नहीं लगता है और वे किसी न किसी कारण से उदास रहते हैं जबकि उन दोनों की आमदनी में कोई अन्तर नहीं होता। पारिवारिक स्थिति भी लगभग एक जैसी हो तब भी कुछ लोग काम और घर दोनों जगह खुश रहते हैं तथा अपने साथ के लोगों को भी खुश रखते हैं। पर कुछ लोगों का जीवन हमेशा खीझ, असंतुष्टि, शिकायतों आदि में ही बीतता है। उन्हें अपने जीवन से सदा गिला शिकवा रहता है। उन्हें काम में, कार्यालय में, स्वयं में, परिवार में, सब में कुछ न कुछ कमी दिखाई देती है। वे स्वयं भी परेशान रहते हैं तथा दूसरों को भी परेशान रखते हैं। मैंने अपने अनुभव से जाना कि यहाँ कर्मों के साथ–साथ जो सबसे मुख्य फर्क है वह है लोगों के जीने का तरीका, उनके सोचने का तरीका एवं हालात के प्रति उनका नकारात्मक रवैया ।

मजबूरी है या ज़रूरी है?? कोई भी कार्य आप चाहें तो मजबूरी समझ कर भी कर सकते हैं अथवा ज़रूरी समझ कर । परन्तु यदि मजबूरी समझकर करेंगे तो आप कार्य की प्रक्रिया का आनन्द नहीं ले पाएँगे और यदि ज़रूरी समझकर करेंगे तो कार्य की प्रक्रिया का आनन्द भी उठा पाएँगे और वह कार्य आपको बोझ नहीं लगेगा ।

मैंने किसी को सुखी पारिवारिक ज़िन्दगी के लिए सलाह दी कि वे अपने परिवार को छुट्टी के दिन कहीं घुमाने ले जाया करें! शायद मेरी यह सलाह उन्हें पसन्द नहीं आई, उन्होंने कहा, ''आप कैसी बात करते हैं। एक तो पहले ही छह दिन मैं काम में पिसता रहता हूँ, ऊपर से आप कहते हैं छुट्टी के दिन परिवार को कहीं घुमाने ले जाऊँ, पैसे बर्बाद करूँ ?'' मैंने उनसे बड़े विनम्र भाव से कहा ''आखिर आप काम पर पिसने के लिए जाते ही क्यों है?'' मुझे समझ नहीं आया कि कैसे कोई छह दिन लगातार अपनी मर्जी से तकलीफें उठाने जाता है। क्या आप का संगठन (Office) आप को फोन कर के घर से बुलाता है?'' उन्होंने कहा ''नहीं'', फिर मैंने उनसे कहा, ''क्या आप को नहीं लगता कि आप अपनी इच्छा से काम पर जाते हैं। कोई आपको ज़बरदस्ती नहीं बुलाता, यानी आप अपनी मर्जी से वहाँ पिसने जाते हैं। इसमें दोष किसका है ? यदि आप की जगह किसी और को काम पर रख लिया जाए अथवा आपके बच्चों को घुमाने के लिए कोई और तैयार हो जाए तो क्या आप को अच्छा लगेगा ?'' इस पर वह सज्जन चुप हो गए।

हमें चाहिए कि हम अपनी सोच बदलें। अपने जीवन से ''पड़ता है'' को हटाएं तथा ''चाहता हूँ'' को इस्तेमाल करें। इस से आपको जीवन में आनन्द का अनुभव होगा। कुछ काम ज़िन्दगी के ऐसे होते हैं जो करने पड़ते हैं लेकिन अगर उनको हम खुशी–खुशी करेंगे तो उनको करने में आनन्द आएगा ।

विचारों पर गौर करें, ये आपके वचन बनते हैं,
वचनों पर गौर करें, ये आपके कर्म बनते हैं,

कर्मों पर गौर करें, ये आपकी आदत बनते हैं
आदतों पर गौर करें, ये आपका चरित्र बनाती हैं।

कुलदीप कुमार द्विवेदी
प्रबंधक (एच आर डी) एवं प्रशासन प्रमुख

सुपात्र

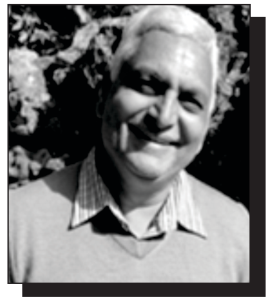

1) जंगल में शेर–शेरनी शिकार के लिए दूर तक गए। वे अपने बच्चों को अकेला छोड़ गए।

जब देर तक नहीं लौटे तो बच्चे भूख से छटपटाने लगे। उसी समय एक बकरी आई। उसे दया आई और उन बच्चों को दूध पिलाया। फिर बच्चे मस्ती करने लगे।

तभी शेर–शेरनी आए। बकरी को देख लाल–पीले होकर शेर हमला करता, उससे पहले बच्चों ने कहा – इसने हमें दूध पिलाकर बड़ा उपकार किया है, नहीं तो हम मर जाते।

अब शेर खुश हुआ और कृतज्ञता के भाव से बोला– हम तुम्हारा उपकार कभी नही भूलेंगे। जाओ, आज़ादी के साथ जंगल मे घूमो फिरो, मौज करो। अब बकरी जंगल में निर्भयता के साथ रहने लगी । यहाँ तक कि शेर की पीठ पर बैठकर भी कभी –कभी पेड़ों के पत्ते खाती थी।

यह दृश्य चील ने देखा तो हैरानी से बकरी को पूछा। तब उसे पता चला कि उपकार का कितना महत्व है।

चील ने यह सोच कर कि एक प्रयोग मैं भी करती हूँ, चूहों के छोटे–छोटे बच्चे दलदल में फंसे थे। निकलने का प्रयास करते पर कोशिश बेकार । चील ने उनको पकड़–पकड़ कर सुरक्षित स्थान पर पहुँचाया। बच्चे भीगे थे। सर्दी से काँप रहे थे। तब चील ने अपने पंखों में छुपाया। बच्चों को बेहद राहत मिली।

काफी समय बाद चील उड़ कर जाने लगी तो हैरान हो उठी, क्योंकि चूहों के बच्चों ने उस के पंख कुतर डाले थे। चील ने यह घटना बकरी को सुनाई। तुमने भी उपकार किया और मैंने भी किया, फिर यह फल अलग क्यों ? बकरी हँसी फिर गंभीरता से कहा, "उपकार करो, तो शेरों पर करो, चूहों पर नहीं क्योंकि कायर कभी उपकार को याद नहीं रखते और बहादुर कभी उपकार नहीं भूलते...!!!"

2) अगर ज़िंदगी को कामयाब बनाना हो तो याद रखें – पाँव भले ही फिसल जाए पर ज़ुबान को कभी मत फिसलने देना । झूठ और दिखावे की रफ़्तार कितनी भी तेज़ हो पर मंजिल तक केवल सच ही पहुँचता है। जो लोग खुश होना नहीं चाहते, उन्हें कोई खुश नहीं कर सकता और जो खुश रहने का हुनर जानते हैं उन्हें कोई खुश रहने से रोक नहीं सकता । विनम्रता से बोलना, एक दूसरे का आदर करना, माफी माँगना तथा शुक्रिया अदा करना–ये चार गुण जिसके पास हैं वह हर किसी के दिल पर राज़ करता है। आपकी अच्छाइयाँ बेशक अदृश्य हो सकती हैं लेकिन इनकी छाप हमेशा दूसरों के हृदय में विराजमान रहती है। सुख व्यक्ति के अहंकार की परीक्षा लेता है जबकि दुःख व्यक्ति के धैर्य की । दोनों परीक्षाओं में उत्तीर्ण व्यक्ति का जीवन ही सफल जीवन माना जाता है!

मोहन लाल
प्रबंधक (वित्त)
विभाग – ए ऍफ डी

सच्चा इंसान

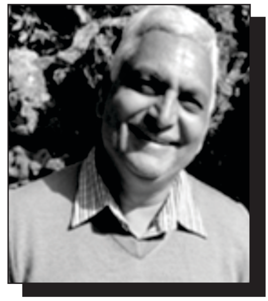

रामानुजाचार्य प्राचीन काल में हुए एक प्रसिद्ध विद्वान थे। उनका जन्म मद्रास नगर के समीप पेरुबुदूर गाँव में हुआ था। बाल्यकाल में इन्हें शिक्षा ग्रहण करने के लिए भेजा गया। रामानुज के गुरु ने बहुत मनोयोग से शिष्य को शिक्षा दी। शिक्षा समाप्त होने पर वे बोले– 'पुत्र, मैं तुम्हें एक मंत्र की दीक्षा दे रहा हूँ। इस मंत्र के सुनने से भी स्वर्गलोक की प्राप्ति होती है।'

रामानुज ने श्रद्धा भाव से मंत्र की दीक्षा ली। वह मंत्र था –'ॐ नमो नारायणाय' । आश्रम छोड़ने से पहले गुरु ने एक बार फिर चेतावनी दी – 'रामानुज, ध्यान रहे, यह मंत्र किसी अयोग्य व्यक्ति के कानों में न पड़े।'

रामानुज ने मन ही मन सोचा – 'इस मंत्र की शक्ति कितनी अपार है। यदि इसे केवल सुनने भर से ही स्वर्ग की प्राप्ति हो सकती है तो क्यों न मैं सभी को यह मंत्र सिखा दूँ।' रामानुज के हृदय में मनुष्य मात्र के कल्याण की भावना छिपी थी। इसके लिए उन्होंने अपने गुरु की आज्ञा भी भंग कर दी। उन्होंने संपूर्ण प्रदेश में उक्त मंत्र का जाप आरंभ करवा दिया। सभी व्यक्ति वह मंत्र जपने लगे। गुरु जी को पता लगा । उन्हें बहुत क्रोध आया। रामानुज ने उन्हें शांत करते हुए उत्तर दिया, 'गुरुजी, इस मंत्र के जाप से सभी स्वर्ग को चले जाएँगे। केवल मैं ही नहीं जा पाऊँगा, क्योंकि मैंने आपकी आज्ञा का पालन नहीं किया है। सिर्फ मैं ही नरक में जाऊँगा। यदि मेरे नरक जाने से सभी को स्वर्ग मिलता है, तो इसमें नुकसान ही क्या ?"

गुरु ने शिष्य का उत्तर सुन कर उसे गले से लगा लिया और बोले– ' वत्स, तुमने तो मेरी आँखें खोल दीं। तुम नरक कैसे जा सकते हो ? सभी का भला सोचने वाला सदा ही सुख पाता है। तुम सच्चे अर्थों में आचार्य हो ।'

रामानुजाचार्य अपने गुरु के चरणों में झुक गए।

शिक्षाः– लोगों को भी रामानुज की भाँति सच्चे और सही मायने में इंसान बनना चाहिए। सच्चा इंसान वह नहीं होता, जो केवल अपने बारे में सोचे। इंसान वही है, जो दूसरों का भला करता है। सदैव प्रसन्न रहिए – जो प्राप्त है, पर्याप्त है। जिसका मन मस्त है – उसके पास समस्त है।।

मोहन लाल
प्रबंधक (वित्त)
विभाग – ए ऍफ डी

बौद्धिक सम्पदा प्रबंधन

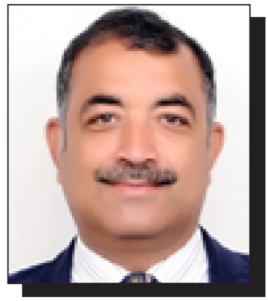

विश्व के विकास में बौद्धिक कार्यों का विशेष योगदान है। संगठनों की उन्नति और प्रतिस्पर्धात्मक लाभ का प्रमुख कारण उनकी बौद्धिक सम्पदा को माना गया है। कंपनियों की प्रौद्योगिकी आधारित कार्यपद्धति आर्थिक सफलता की कुँज़ी बन चुकी है। बौद्धिक परिश्रम से अनुसंधान और विकास कार्य किये जाते हैं जिससे नए उत्पादों या प्रक्रियाओं का सृजन होता है। मौजूदा दौर में विश्व बाज़ार में कंपनियों का मूल्यांकन उनकी बौद्धिक संपदा के आधार पर किया जाता है । कंपनी द्वारा विकसित प्रौद्योगिकी, डिज़ाइन और ब्रांड आदि के रूप में जो संपत्ति है, वह बौद्धिक सम्पति का रूप है। बौद्धिक सम्पदा का सृजन और लाभार्थ उपयोग किसी भी व्यवसाय के लिए अति आवश्यक है। व्यावसायिक नवाचार प्रणालीगत है और इसके लिए व्यवसाय के सभी पहलुओं पर सावधानीपूर्वक विचार करने की आवश्यकता होती है। बौद्धिक संपदा प्रबंधन एक अत्यधिक परिष्कृत विषय है।

कंपनी बौद्धिक प्रयासों पर स्वामित्व सुरक्षित करने के लिए अपने विचारों और प्रौद्योगिकियों को पंजीकृत करती हैं। पेटेंट, ट्रेडमार्क, डिज़ाइन, व्यापार रहस्य और कॉपीराइट अधिकार प्राप्त करके कंपनियाँ अपने विचारों को बौद्धिक संपदा में बदल देती हैं। परिणामस्वरूप, कंपनियां अपनी बौद्धिक संपदा का उपयोग विभिन्न तरीकों से कर सकती हैं। परंपरागत रूप से कंपनियों ने बौद्धिक सम्पदा पंजीकरण को अपने उत्पादों की सुरक्षा के लिए लागू किया परंतु वैश्विक स्तर पर नॉलेज बेस्ड इंडस्ट्रीज के विस्तार से उत्पन्न तकनीकी व्यवस्थाएँ, बौद्धिक संपदा से धन अर्जन का एक नया रास्ता दिखाती है। बौद्धिक संपदा से राजस्व प्राप्ति इसे बेचकर, इसे लाइसेंस देकर इसे पूल करके या इसका आदान–प्रदान करके की जा सकती है। बौद्धिक संपदा के खरीदारों और विक्रेताओं वाला यह पूरा नया बाजार आज की बौद्धिक संपदा अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण केंद्र है। बौद्धिक संपदा अर्थव्यवस्था में सफलता के लिए कंपनियों को बौद्धिक सम्पदा प्रबंधन कार्यनीति का मसौदा तैयार करना अत्यंत जरूरी है।

बौद्धिक संपदा प्रबंधन एक अत्यधिक परिष्कृत विषय है और इसके लिए आई पी कानून, प्रौद्योगिकी, अर्थशास्त्र और वित्त की समझ की आवश्यकता होती है। कई बड़ी कंपनियों में बौद्धिक संपदा प्रबंधन नई व्यावसायिक प्रणालियों / मॉडलों में जोड़ा गया है। आज की प्रतिस्पर्धी व्यावसायिक दुनिया में, कंपनी के प्रबंधन को समग्र व्यावसायिक लक्ष्यों के लिए बौद्धिक संपदा अधिकारों के महत्व को समझना चाहिए और उन लक्ष्यों के अनुसार एक बौद्धिक संपदा प्रबंधन रणनीति विकसित और कार्यान्वित करनी चाहिए। उद्योगों को अपनी व्यवसाय रणनीति विकसित करने में बौद्धिक सम्पदा (आई पी आर) के संभावित लाभों को समझने की आवश्यकता है। एक सही बौद्धिक सम्पदा (आईपी) कार्यनीति मुख्यतः निम्न प्रकार से किसी संगठन को लाभ पहुँचा सकती हैः

1. निवेश आकर्षित करना

2. बौद्धिक सम्पदा लाइसेंसिंग से राजस्व प्राप्त करना

3. प्रतिस्पर्धियों को बाज़ार में प्रवेश करने से रोकना

4. उत्पादया सेवा के प्रीमियम मूल्य निर्धारण करना

5 . रचनात्मकता का पोषण और नवाचार को बढ़ावा देना

बौद्धिक सम्पदा प्रबंधन किसी कंपनी को कैसे लाभ पहुँचा सकता है, उसका सूचक यह है कि वह कंपनी अपनी बौद्धिक सम्पदा प्रबंधन (आई पी एम) रणनीति को कैसे लागू करती है । निश्चित ही, कंपनी का प्रतिस्पर्धी माहौल, प्रौद्योगिकी स्थिति, आकार, कानूनी वातावरण और व्यवसाय की परिपक्वता उस की बौद्धिक सम्पदा रणनीति (आई पी स्ट्रेटेजी) निर्धारित करती है।

बौद्धिक सम्पदा (इंटेलेक्चुअल प्रॉपर्टी – आईपी) प्रबंधन कार्यनीति का मूल उद्देश्य कंपनी में बौद्धिक सम्पदा के प्रति जागरूकता से आरम्भ होकर, आंतरिक और बाह्य रूप से आई पी के प्रबंधन को संबोधित करना है। आई पी रणनीति के मूल तत्व एक अच्छी व्यावसायिक रणनीति से भिन्न नहीं होने चाहिए। आंतरिक आई पी एम महत्वपूर्ण है क्योंकि यदि आई पी की पहचान और सुरक्षा नहीं की गई तो प्रबंधन करने के लिए कुछ भी नहीं होगा। साथ ही, कंपनी की प्रतिस्पर्धात्मकता और आर्थिक संपदा पर प्रभाव डालने के लिए आई पी एम रणनीति को बाहरी रूप से भी निर्देशित किया जाना चाहिए। आई पी रणनीति के आंतरिक और बाहरी तत्वों को संगठन के भीतर लागू किया जाना चाहिए। आंतरिक आई पी रणनीति में शामिल हैः आई पी ऑडिट, आई पी नीति और आई पी अधिग्रहण और रखरखाव रणनीतियाँ। बाहरी आई पी रणनीति में शामिल हैः प्रवर्तन रणनीति, प्रतिस्पर्धी खुफिया रणनीति और सार्वजनिक नीति संबंधी मुद्दे ।

बौद्धिक संपदा प्रबंधन में शामिल आई पी ऑडिट किसी व्यवसाय की बौद्धिक संपत्तियों को पहचानने व उनकी महत्वपूर्णता जानने में सहायक होता है। आई पी नीति कंपनी का बुनियादी नियम है जिनका संगठन आई पी को संभालने में पालन करता है जैसे कि कर्मचारियों द्वारा बौद्धिक कार्यों को पंजीकृत कर उन आविष्कारों को पेटेंट कराना, आई पी की रिकॉर्डिंग, मूल्यांकन और सुरक्षा की एक सुसंगत और प्रभावी प्रक्रिया विकसित करना। आई पी नीति में कर्मचारियों द्वारा नवनिर्मित आई पी आर की रिपोर्टिंग के लिए नियम और प्रक्रियाएँ शामिल होनी चाहिए। नीति में आई पी फाइलिंग के साथ– साथ रखरखाव प्रक्रियाओं के लिए नीति और प्रक्रियाएं निर्धारित होनी चाहिए। आई पी का प्रवर्तन समग्र आई पी रणनीति का पहला और सबसे महत्वपूर्ण बाहरी तत्व है। आई पी का प्रवर्तन आक्रामक और रक्षात्मक उद्देश्यों को जोड़ता है। कंपनी को यह निर्धारित करने के लिए नियम विकसित करने होंगे कि किस प्रकार के आई पी अधिकार सुरक्षित किए जाएंगे। चूँकि बौद्धिक संपदा संरक्षण कंपनियों के लिए एक

रणनीतिक मुद्दा बन गया है, प्रबंधकों को लोक–नीति के मुद्दों के बारे में जागरूक होने की आवश्यकता है, जो प्रवेश बाधा उत्पन्न कर सकते हैं या आई पी के शोषण से पूर्ण लाभ प्राप्त करने की उनकी क्षमता पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं। आवश्यक दवाओं तक पहुँच, ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर का उपयोग सार्वजनिक नीति मुद्दों के अच्छे उदाहरण हैं जो किसी कंपनी की आई पी रणनीति पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकते हैं।

बौद्धिक सम्पति प्रबंधन के लिए एक व्यावहारीकरण नीति लागू करने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए जा सकते हैं:

1. कंपनी के सभी स्तर के कर्मचारियों को बौद्धिक सम्पदा नीति व सम्बंधित विषय वस्तु के प्रति जागरूक करना।

2. आई पी ऑडिट तैयार करना, उसका रखरखाव करना और उन्हें कंपनी के शीर्ष प्रबंधन को रिपोर्ट करना।

3. बौद्धिक संपदा का दोहन करने की संस्कृति बनाना और उसके महत्व के अनुसार ग्रेडिंग करना।

4. कंपनी आई पी पर एक बुक वैल्यू रखी जानी चाहिए और इसके मूल्य की सूचना दी जानी चाहिए।

5. आई पी और नवीनीकरण का प्रबंधन किया जाना चाहिए और स्वतंत्र निगरानी और रिपोर्टिंग सेवाओं पर विचार किया जाना चाहिए ।

6. महत्वपूर्ण पेटेंटों और आई पी एसेट्स का स्टेटस डेशबोर्ड बनाना।

7. कंपनी के ट्रेडमार्क और / या ब्रॉड और उनके उचित उपयोग को ऊर्जावान रूप से संरक्षित किया जाना चाहिए।

8. रॉयल्टी भुगतान और लाइसेंस–इन और लाइसेंस–आउट दोनों जांच यह सुनिश्चित करने के लिए की जानी चाहिए कि उचित रॉयल्टी का भुगतान और प्राप्त किया गया है।

9. आई पी के प्रबंधन और प्रवर्तन पर अपनी पेटेंट वकील फर्म और अपने आई पी सर्च एजेंट से स्वतंत्र सलाह ली जानी चाहिए।

कंपनी के भीतर आई पी संगठन की स्थिति अक्सर यह दर्शाती है कि कंपनी आई पी को कितना महत्व देती है। अनुसंधान एवं विकास संगठन के लिए बौद्धिक संपदा प्रबंधन अति आवश्यक विषय है।

संदर्भ : https://www-wipo-int/sme/en/checklist-html

चेतन मनचंदा
प्रमुख तकनीकी अधिकारी–1
विभाग– एस टी डी

माँ

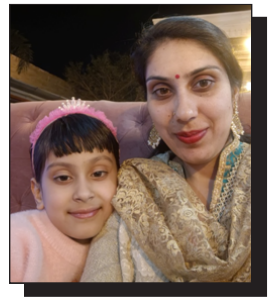

माँ तुम कितनी भोली–भाली
कितनी प्यारी–प्यारी हो
दिल से सच्ची मिसरी जैसी
सारे जग से न्यारी हो।
मेरे मन में जोश तुम्हीं से
तुमसे ही प्रकाश
मुझमें साहस तुमसे आता
तुमसे ही विश्वास।

शिवन्या शर्मा
सुपुत्री–श्री अमित शर्मा
उम्र – 7 साल
कक्षा – द्वितीय

हिन्दी पखवाड़ा (2023) के उपलक्ष्य में सी–डैक मुख्यालय द्वारा करवाई गई निबंध लेखन प्रतियोगिता में कर्मचारी वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त निबन्ध

शहरीकरण के परिणाम

शहरीकरण का युग

भारत, जिसे अपनी अद्वितीय परम्पराओं और प्राचीन ऐतिहासिक स्थलों के लिए जाना जाता है, ने दुनिया के अनुरूप एक नए युग की शुरूआत की है– शहरीकरण का युग। शहरीकरण से तात्पर्य है शहरों की जनसंख्या में बढ़ोतरी, लोगों का गाँवों से शहरों की ओर पलायन व आवाजाही । संयुक्त राष्ट्र विश्व शहरीकरण संभावना रिपोर्ट के अनुसार, भारत की लगभग 34 प्रतिशत आबादी शहरों में रहती है और 2051 तक देश की आधी से अधिक आबादी शहरों में रह रही होगी। शहरीकरण का युग विभिन्न प्रकार की समस्याओं और समृद्धि के साथ आया है, और इसके साथ ही भारत के ग्रामीण और शहरी जीवन के बीच एक नए संबंध की भी शुरूआत हुई है।

भारत में शहरीकरणः सिंधु घाटी से आधुनिक युग तक

भारत में शहरीकरण की एक समृद्ध ऐतिहासिक विरासत है, जो सिंधु घाटी सभ्यता से जुड़ी है, जहाँ मोहनजोदड़ो और हड़प्पा जैसे शहर पनपे थे। हज़ारों वर्षों के दौरान, भारत का शहरी परिदृश्य विकसित हुआ है, जिसमें प्राचीन, मध्ययुगीन और आधुनिक शहर इसके सांस्कृतिक और आर्थिक ताने–बाने को आकार देते रहे हैं। भारत के शहरीकरण को स्मार्ट सिटीज मिशन, अमृत मिशन, ह्रदय योजना, पीएम आवास योजना (शहरी) और स्वच्छ भारत मिशन जैसी पहलों द्वारा चिह्नित किया गया है, जिनका उद्देश्य टिकाऊ शहरी विकास को बढ़ावा देना है। ये प्रयास दिखाते हैं कि भारत आधुनिक युग में शहरीकरण के द्वारा प्रस्तुत चुनौतियों और अवसरों का सामना करने के लिए संकल्पबद्ध है।

शहरीकरण के प्रेरणा स्रोत

''शहर प्रवासियों के लिए, महत्वाकांक्षियों के लिए और नए जीवन की तलाश में रहने वालों के लिए चुंबक होते हैं।''

शहरीकरण के प्रेरणा स्रोत दो भागों में विभाजित किए जा सकते हैं। एक वह जो लोगों को शहर की ओर आकर्षित करते हैं (खींचने वाले स्त्रोत) और दूसरे वह जो लोगों को गाँव छोड़ने पर मजबूर करते हैं (धक्का देने वाले स्त्रोत)।

आकर्षित करने वाले प्रमुख स्त्रोत हैं – बेहतर रोज़गार के अवसर, सुरक्षा, बेहतर बुनियादी ढांचा, बेहतर सुविधाएँ, जैसे उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएँ, परिवहन सुविधाएँ और जीवन की बेहतर गुणवत्ता, आदि।

गाँव छोड़ने पर मजबूर करने वाले प्रमुख स्त्रोत हैं– आर्थिक दुर्व्यवस्था, आवश्यक सुविधाओं की कमी, रोज़गार के अवसरों की कमी, उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा के कम अवसर, आदि।

शहरीकरण के परिणाम

एक तरफ शहरीकरण आर्थिक विकास की एक उच्च विशेषता है। शहरीकरण देश में उन्नति व विकास लेकर आता है जो कि लोक–स्तर व देश–स्तर दोनों पर लाभदायक है। वहीं दूसरी ओर शहरों पर बढ़ता प्रभाव व बढ़ता शहरीकरण अपनी चुनौतियाँ और समस्याएं साथ लेकर आता है।

शहरीकरण के सकारात्मक परिणाम

''शहरीकरण सिर्फ शहरों के विकास के बारे में नहीं है, बल्कि समाज, अर्थव्यवस्था, और संस्कृति के परिवर्तन के बारे में है। '

आर्थिक विकास– शहरीकरण उद्योग, निवेश और रोज़गार को बढ़ावा देता है और देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान करता है, जिससे आर्थिक विकास होता है।

सांस्कृतिक विविधता – शहरीकरण विभिन्न संस्कृतियों के लोगों को शहरों में लाकर सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा देता है, जहाँ वे परंपराएं, भाषाएं और व्यंजन सांझा करते हैं।

आवश्यक सार्वजनिक सुविधाओं में सुधार व उचित सेवा– शहरों में उचित जन सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं जैसे कि अच्छी सड़कें, पार्क, सार्वजनिक शौचालय, खेल के मैदान, अच्छी परिवहन सुविधाएँ, बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं, आदि।

औद्योगीकरण – अपने बड़े बाज़ारों और पूँजी, उद्यमशीलता और तकनीकी कौशल के भंडार वाले शहर उद्योगों को आकर्षित करने वाले शक्तिशाली चुंबक के रूप में कार्य करते हैं।

रोज़गार के अवसर– शहरीकरण तथा औद्योगीकरण का सबसे अधिक लाभ रोजगार के तथा आर्थिक सुधार के अवसर प्रदान करने में है। यह लोगों को आकर्षित करने का एक प्रमुख कारण है।

उच्च शिक्षा के अवसर – शहरों में आमतौर पर ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में बेहतर स्कूल और विश्वविद्यालय होते हैं।

मनोरंजन और बेहतर जीवनशैली– शहर अवकाश गतिविधियाँ और बेहतर जीवन शैली प्रदान करते हैं। यह विशेष रूप से युवाओं को आकर्षित करता है।

शहरीकरण के नकारात्मक परिणाम

''शहर विकास के इंजन होते हैं, लेकिन उनके साथ एक लागत भी आती है।''

हरियाली और जीव–विविधता का नुकसान – शहर जंगलों और कृषि भूमियों में बसाए जाते हैं, जिससे आवास विनाश और वनों की कटाई होती है। हरियाली के नुकसान के फल स्वरुप ''ताप द्वीप प्रभाव''का अनुभव किया जाता है जिसमें शहर में अपने आस पास के इलाकों से अधिक तापमान होता है।

प्रदूषण– शहरीकरण के सबसे गंभीर प्रभावों में से एक वायु प्रदूषण है जो शहरों में वाहनों और उद्योगों में अत्यधिक वृद्धि के कारण उत्पन्न होता है। वह हवा में हानिकारक प्रदूषक छोड़ते हैं जो स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं का कारण बनते हैं। जैसे– दिल्ली में प्रदूषण की समस्या ।

भीड़–भाड़, आवास संकट – जनसंख्या बढ़ोतरी के कारण शहरों में अत्यधिक भीड़ और आवास संकट गंभीर समस्याएँ हैं जो शहरों के विकास और जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकती हैं।

बेरोज़गारी– उच्च कुशल नौकरियों की कमी महानगरीय क्षेत्रों में सबसे अधिक प्रचलित है, खासकर शिक्षित व्यक्तियों के बीच।

मलिन बस्तियाँ – शहरी क्षेत्रों में रहने की उच्च लागत, बेरोज़गारी और अधिक जनसंख्या – इन सबके कारण मलिन बस्तियों अथवा झोपड़–पट्टियों का विकास होता है जो शहरों के लिए एक बड़ी चुनौती है।

पानी और स्वच्छता की समस्याएँ– नगर पालिकाओं को सीवेज प्रबंधन, कचरे का प्रबंधन, उचित स्वच्छता

आदि गंभीर मुद्दों का सामना करना पड़ता है।

स्वास्थ्य संकटः टाइफाइड, पेचिश, प्लेग और डायरिया जैसी संचारी बीमारियाँ तेज़ी से फैल सकती हैं। कोविड–19 महामारी एक उदाहरण है कि कैसे अधिक आबादी वाले शहर और चिकित्सा सुविधाएं एक महामारी के बोझ तले ढह जाती हैं।

अपराध दर में वृद्धि – संसाधनों की कमी, भीड़भाड़, बेरोजगारी, गरीबी, सामाजिक सेवाओं की कमी के कारण हिंसा, नशा और अपहरण, चोरी, डकैती आदि जैसे अपराध सामने आते हैं, जो शहरों की शांति को बिगाड़ते हैं।

सतत शहरीकरण की ओर

''सतत शहरीकरण हमारे शहरों के उज्जवल और हरित भविष्य की कुंजी है।''

आर्थिक विकास के लिए शहरीकरण एक ज़रूरत है। भारत की शहरी आबादी में तेज़ी से वृद्धि देखी जा रही है। जहाँ शहरीकरण लोगों व देश की उन्नति में कार्यशील है और भारत सरकार के महत्त्वपूर्ण कदम तथा निवेशों से

बुनियादी सेवाओं में उल्लेखनीय सुधार हुए हैं, वहीं बढ़ती हुई शहरी आबादी और उपर्युक्त समस्याओं और चुनौतियों के मद्देनज़र उचित बुनियादी ढाँचा शहरों को जन सेवाएं पर्याप्त रूप से प्रदान करने में सक्षम बनाएगा। इससे नागरिक देश के आर्थिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकेंगे और उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार आएगा। सबसे अहम् जरूरत है शहरी और ग्रामीण भारत को साथ–साथ विकसित करने के दृष्टिकोण की ।

शहरी विकास की योजना और प्रबंधन, सतत विकास, सार्वजनिक परिवहन प्रणाली में सुधार, बुनियादी ढांचा, ग्रामीण क्षेत्रों का आर्थिक विकास, ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का प्रावधान एवं बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं, सामाजिक समावेश को बढ़ावा देना और असमानताओं को कम करना जैसे उचित कदम शहरीकरण के नकारात्मक प्रभावों को कम करने में प्रभावी साबित हो सकते हैं।

देश को ले जाए उन्नति की ओर

बढ़ता हुआ ये शहरीकरण

रखना होगा ध्यान

ये है एक मशाल

करे रोशन

न करे भस्म

हरप्रीत कौर गिल
परियोजना अभियन्ता
विभाग – साइबर सुरक्षा

हिन्दी पखवाड़ा (2023) के उपलक्ष्य में सी–डैक मुख्यालय द्वारा करवाई गई निबंध लेखन प्रतियोगिता में कर्मचारी वर्ग में द्वितीय स्थान प्राप्त निबन्ध

शहरीकरण के परिणाम

प्रस्तावना– शहरीकरण व्यक्तियों द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों में प्रवास करने का प्रक्रम है। शहरीकरण एक प्रशासनिक और सामाजिक प्रक्रिया है जिसमें शहरों को बेहतर और सुरक्षित बनाने के उपायों का अध्ययन किया जाता है। एम॰ एन॰ श्रीवास्तवः– ''नगरीकरण का तात्पर्य केवल सीमित क्षेत्र में अधिक जनसंख्या से नहीं हैं, बल्कि सामाजिक–आर्थिक संबंधों में परिवर्तन से भी है।'' एक आदर्श शहर विशेषज्ञता, श्रम–विभाजन, सामाजिक गतिशीलता और आर्थिक अवसर प्रदान करता है, परन्तु ज्यादातर शहरों में क्षणिकता, सतहीपन और गुमनामी और आर्थिक असमानता देखने को मिलती है। 2011 की जनगणना के अनुसार शहरी जनसंख्या 366 करोड़ है, जो कि 2030 तक 7.1 अरब में से 5 अरब शहरों में रहेंगे। अमेरिका 73 प्रतिशत, युरोप 65 प्रतिशत, अफ्रीका 52 प्रतिशत और भारत 34 प्रतिशत जनसंख्या शहरी है। शहरीकरण को प्राचीनकाल से सभ्यता का प्रतीक माना गया है। जैसे सिन्धु घाटी, मेसोपोटोमिया, चीन एवं मित्र की सभ्यताएँ इसका उदाहरण हैं, परन्तु आज के समय में बहुत सारी समस्याएँ पैदा हो गई हैं।

विषय–विस्तार – शहरीकरण के परिणाम विभिन्न पहलुओं में देखे जा सकते हैं।

भौतिक– शहरों का विकास बहुत तेजी से हुआ है। चीन की शहरी जनसंख्या 1760 में 26 प्रतिशत थी जो 2023 में बढ़कर 60 प्रतिशत हो गई है जिससे जीवन गुणवत्ता और प्रत्याशा, कौशलीकृत कार्यबल और प्रभावी उत्पादकता में काफी परिवर्तन आया है। अच्छी सड़कें और यातायात के साधनों में बढ़ोतरी हुई है। बिजली, चिकित्सा और संचार जैसी सुविधाएँ ग्रामीण क्षेत्रों से बेहतर मिलती है, जहाँ शहरी क्षेत्रों में नेटवर्क की पाँचवी पीढ़ी (5G) की सुविधाएँ उपलब्ध हो रही हैं, वहीं ग्रामीण क्षेत्रों को अभी भी 2G और 3G नेटवर्क की समस्याओं से दो चार होना पड़ रहा है। तेजी से हुए औद्योगिकीकरण और नए–नए नियोजित उपनगरों की वजह से बाढ़ और पेयजल की समस्या पैदा हो रही है। प्रदूषण, यातायात जाम और सड़क दुर्घटनाएँ प्रमुख परिणाम हैं। बेहतर जीवन की आस, ऊँची–ऊँची इमारतों से प्रभावित होकर लोग गाँवों से शहरों में आते हैं, किन्तु उनकी आय बहुत कम होती है, जिससे सड़क किनारे, कूड़े के ढेर के पास मलिन बस्तियाँ बना लेते हैं। "प्लेनेट ऑफ स्लम" के लेखक माइक डेविस के अनुसार नाइजीरिया में 70 प्रतिशत शहरी मलिन बस्तियों में रहते हैं और भारत में 56 प्रतिशत शहरी मलिन बस्तियों में रहते हैं जिससे जीवन का स्तर खराब होता है और बड़ी–बड़ी बीमारियाँ देखने को मिलती है।

सामाजिक : शहरों में महिलाओं की काफी तरक्की हुई है। आजकल महिलाएँ शिक्षा, व्यापार, चिकित्सा लगभग सभी

क्षेत्रों में आगे बढ़ रही हैं। गाँवों की अपेक्षा ज्यादा सुरक्षित हैं। तलाक पुनर्विवाह शहरों में आसान होता है। ग्रामीण क्षेत्र में आज भी संयुक्त परिवार देखने को मिलते हैं किन्तु शहरों में एकल परिवार और दोहरी आय वाले माता – पिता देखने को मिलते हैं जिससे समाज टूटा हुआ नज़र आता है और बच्चों का पालन–पोषण क्रेच या शिशु देखभाल केन्द्र में होता है जिससे उनके अन्दर सामाजिक संस्कार और नैतिक शिक्षा का अभाव देखने को मिलता है। बहुत बड़ी जनसंख्या का जीवन प्रत्याशा, शिशु मृत्युदर, पोषण, शिक्षा और चिकित्सा पर खर्च किया गया बजट बहुत कम होता है जिससे गरीबी, जुआ, चोरी, कालाबाज़ारी और अपराध देखने को मिलते हैं। गाँवों से आए लाखों लोगों को बेहतर जीवन स्तर, स्वास्थ्य और नौकरी के अवसर की झूठी आस बेरोजगार बना देती है। जिससे कुछ लोग भिक्षावृत्ति अपना लेते हैं और कुछ लोग वेश्यावृत्ति का शिकार हो जाते हैं। अनैच्छिक रूप से बच्चों और महिलाओं की तस्करी होती है। कानून व्यवस्था, सरकारी योजनाओं और नई तकनीकियों का सही उपयोग शहरों को आदर्श बना सकता है।

मनोवैज्ञानिक– ज्यादातर लोगों के ऑफिस शहरों में निवास स्थान से काफी दूर होते हैं तो ऑफिस आवागमन के साथ–साथ घर पर भी तनाव का सामना करना पड़ता है। ज्यादातर शहरों में ही लोग तनाव और डिप्रेशन का शिकार होते हैं। कई लोग शहर छोड़ पहाड़ों में आराम ढूँढ रहे होते हैं। बहुत सारी बीमारियों के नाम से ग्रामीण आज भी अनभिज्ञ रहते हैं। जबकि शहरों में प्रत्येक दिन लाखों लोग शिकार होते हैं।

सांस्कृतिकः– ग्रामीण परिवेश से शहर में आने से संस्कृति भी रूपांतरित होती है और लोगों में जाति, धर्म, लिंग और क्षेत्र विशेष से बढ़कर मानवता के उच्च मूल्यों को देखा जा सकता है। परन्तु लोगों में सम्बन्धों की अवैयक्तिकता देखने को मिलती है क्योंकि लोगों की नौकरियों का स्थान बदलता रहता है। लोगों का जीवन यांत्रिक हो गया है। यहाँ तक कि लोगों के पास परिवार के लिए भी समय नहीं बच पाता है। लोग दृष्टिकोण को अपना लेते हैं। उनमें मुख्यतः व्यक्तिवाद, गतिशीलता, उदारवाद, सहिष्णुता और सह–अस्तित्व जैसी समस्याएँ देखने को मिलती हैं। दहेज प्रथा जैसी समस्याएँ देखने को मिलती हैं। दहेज प्रथा जैसी कुप्रथा में भी परिवर्तन नहीं हुआ है चाहे गाँव हो या शहर।

पर्यावरणीयः सबसे बड़ा नुकसान पर्यावरण को प्रदूषण, जल प्रदूषण और बढ़ती ग्लोबल वार्मिंग हमारी पृथ्वी के लिए बहुत खतरनाक हैं। कई बड़े महानगरों में तो ऑक्सीजन की कमी और वायु प्रदूषण से बने बादल अकसर देखे जा सकते हैं। अगर ऊर्जा के नवीनीकरणीय संसाधन अपनाए जाएं और सीवेज और अपशिष्ट उत्पाद का सही से निपटान किया जाए तो शहर आदर्श शहर बन जाएँगे।

उपसंहारः शहरीकरण बहुत अच्छा है अगर हमारी पृथ्वी और समाज को कोई नुकसान न पहुँचाए। स्वच्छ जल, सार्वजनिक यातायात, सीवेज, उपचार, चिकित्सा और आवास की व्यवस्था उपलब्ध रहे, ऐसा आदर्श शहर होना चाहिए। कृषि और ग्रामीण परिवेश के सारे उद्योग (कुटीर उद्योग, पशुपालन, डेयरी, आटा एव तेल मिल, चीनी उद्योग एवं वाणिज्य केन्द्र) गाँवों में ही होने चाहिए ताकि बहुत कम लोगों को शहरों में पलायन करना पड़े तथा

हमारी पृथ्वी पर बराबर संतुलन बना रहे। शहरीकरण को नई तकनीकों से और अच्छा बनाया जाए क्योंकि शहरीकरण हमारे समाज के विकास का एक अभिन्न अंग है और हमारी पृथ्वी फिर से हरी भरी हो जाए।

रामस्वरूप

ज्ञान सहयोगी

विभाग–साइबर सुरक्षा प्रौद्योगिकी

हिन्दी पखवाड़े (2023) के दौरान निबंध लेखन प्रतियोगिता में विद्यार्थी वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त लेख

प्राकृतिक आपदाएं – मेरे विचार

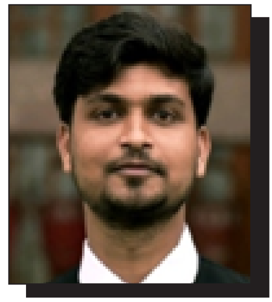

प्रस्तावना– प्रकृति हमें विभिन्न प्रकार के संसाधनों को उपलब्ध कराती है तो कभी–कभी अपना विकराल एंव क्रूर रूप भी दिखाती है, इसी को प्राकृतिक आपदाओं के नाम से जाना जाता है। आज के समय में बाढ़, सूखा, भूस्खलन, सुनामी, ज्वालामुखी, वायरस से संबंधित प्राकृतिक आपदाएँ आती रहती हैं जिसमें इन आपदाओं को बढ़ाने में मनुष्य की अहम भूमिका रहती है। इन आपदाओं के कारण बहुत जान–माल का नुकसान होता है। प्राकृतिक आपदाएं कुछ दशकों से बढ़ी हैं जिसका मुख्य कारण मनुष्य है।

प्राकृतिक आपदाओं के प्रकार एवं कारणः प्राकृतिक आपदाएँ आना सामान्य है। प्राकृतिक आपदाओं के एक नहीं, विभिन्न कारण हैं जिनकी वजह से भिन्न प्रकार की हानियाँ होती है। कुछ मुख्य प्राकृतिक आपदाओं का सामना आए दिन करना पड़ता है।

(1) **बाढ़**– बाढ़ प्राकृतिक आपदाओं में मुख्य आपदाओं में आता है। जब अधिक वर्षा के कारण नदियों एवं तालाबों का जल स्तर बढ़ जाता है तब बाढ़ आती है या बाढ़ का रूप धारण करता है। बाढ़ का पुर्वानुमान लगाया जा सकता है इससे लोगों की जान बचाई जा सकती है। भारत में बाढ़ के कारण हर साल कई लोग बेघर हो जाते हैं तथा उनको आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। बाढ़ की वजह से जान माल का नुकसान होता है।

(2) **भूकंप**– धरती के निचले भाग में जब कंपन उत्पन्न होती है तब धरती की सतह हिलने लगती है। भूकंप के कारण बहुत विनाश होता है। भूकंप के कारण बड़ी–बड़ी इमारतें धराशायी हो जाती है, कई लोगों की मृत्यु हो जाती है।

(3) **सुनामी**– समुद्र में जब भूकंप आता है तब समूद्र की लहरों में हलचल उत्पन्न हो जाती है जिसकी वहज से समुद्र की लहरें बहुत ऊँचाई धारण कर लेती हैं और आस पास के इलाकों में तबाही आ जाती है, बहुत जान–हानि एवं इमारतें बर्बाद हो जाती हैं।

(4) **तूफान व चक्रवात**– समुद्र में आने वाले तूफान व चक्रवात की वजह से विनाशक बाढ़ आती है जिससे आस–पास के इलाकों में जान–माल की हानि होती है और उन्हें विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। भारत में बंगाल की खाड़ी व अरब सागर में हर साल चक्रवात आता है जिससे भारी मात्रा में जान व माल का नुकसान होता है।

(5) **हिमस्खलन**– हिमस्खलन बर्फ का तूफान। ठंडे प्रदेशों में हर साल हिमस्खलन का सामना करना पड़ता

है। बर्फ के तूफान में बड़े–बड़े पहाड़ों से बर्फ नीचे की ओर गिरती है और बर्फ के तूफान का रूप धारण कर लेती है। भारत में हर साल जनवरी–फरवरी माह में बर्फ गिरती है जिसके कारण ठंड बहुत बढ़ जाती है।

(6) **ज्वालामुखी फटना**– ज्वालामुखी के कारण गर्म लावा निकलता है जिसके कारण विश्व के कई इलाकों में विनाश का कारण बनता है। ज्वालामुखी फटने के कारण ज़हरीली गैसें निकलती हैं जो आस–पास के वातावरण को प्रभावित करती हैं।

– सूखा व अकाल पड़ना, महामारी आदि कई प्रकार की प्राकृतिक आपदाएँ होती हैं।

प्राकृतिक आपदाओं का प्रबधंन – प्राकृतिक आपदाओं को रोका नहीं जा सकता। इससे बचने के लिए प्राकृतिक आपदा प्रबंधन का गठन किया जाता है। इसका उद्देश्य आपदाओं में फंसे लोगों की रक्षा करना है।

प्राकृतिक आपदाओं से बचने के उपाय–

(1) नदियों के किनारे निवास न बनाए जाएं जिससे बाढ़ के समय समस्या न उत्पन्न हो।

(2) भूकंप को रोका नहीं जा सकता इसलिए घरों को भूकंप विरोधी बनाया जाए।

(3) प्राकृतिक आपदा के समय अपने लिए किट रखें।

(4) बाढ़ कहां आ रही है, इसके लिए टीवी व रेडियों सुनें और सतर्क रहें।

उपसंहार– प्राकृतिक आपदाओं पर मानव का कोई नियंत्रण नहीं है इसलिए इसके प्रभाव से हमें बचने की जरूरत है। ऐसी कई आपदाएँ है जो मानव सर्जित भी है अतः जितना कम हम प्रकृति के कार्यों में हस्तक्षेप करेंगे, उतना ही प्राकृतिक आपदाओं से बचेंगें।

सुधांशु यादव
छात्र : एम टेक
विभागः वी एल एस आई

हिन्दी पखवाड़े (2023) के दौरान निबंध लेखन प्रतियोगिता में विद्यार्थी वर्ग में द्वितीय स्थान प्राप्त लेख

मोबाइल का जीवन पर प्रभाव

प्रस्तावना— मोबाइल हमारे जीवन का अब एक अभिन्न अंग बन चुका है, जिसमें सभी तरह की सुविधाएँ देने की क्षमता है। जैसा कि हम जानते हैं कि ''आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है।'' हमारी संचार की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु 1973 में ''माटिन कूपर'' नामक व्यक्ति ने मोबाइल का आविष्कार किया था। जिसके द्वारा हम मीलों दूर बैठे व्यक्ति से भी 1 सेकंड में बात कर सकते हैं और अब समय स्मार्ट फ़ोन का आ चुका है जिसके द्वारा विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर लोगों से जुड़ सकते हैं। यह मोबाइल विभिन्न सकारात्मक तथा नकारात्मक प्रभाव लेकर हमारे जीवन में आया है। ये प्रभाव निम्नलिखित हैः—

सकारात्मक प्रभाव—

(1) **विद्यार्थी जीवन**— विद्यार्थियों के लिए तो यह वरदान साबित हो सकता है क्योंकि इन्टरनेट के माध्यम से विभिन्न तरह के ज्ञान को बहुत ही आसानी से प्राप्त किया जा सकता है।

(2) **संचरण**— लोगों का आपस में मेल—जोल विभिन्न प्लेटफॉर्मों द्वारा बढ़ा है जिसमें लोग सिर्फ लिखकर भी अपनी बात मीलों दूर व्यक्ति तक पहुँचा सकते हैं।

''अब वह दौर है जब जुबा रिटायर हो गयी और अंगूठे बातें कर रहे हैं।''

(3) **खरीददारी**— विभिन्न ऐप्स के द्वारा लोग बहुत ही कम दाम में सामान खरीद पा रहे हैं और वह भी घर बैठकर जो कि लोगों के हित में हैं।

(4) **मनोरंजन**— मनोंरजन हेतु विभिन्न प्रकार की फिल्म, वीडियो आदि इन्टरनेट पर देख सकते हैं जिसके द्वारा मनोरंजन किया जा सकता है।

नकारात्मक प्रभाव—

हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। यदि सकरात्मक प्रभाव है तो मोबाइल के कारण विभिन्न प्रकार के नकारात्मक प्रभाव भी है।

''जब तक फ़ोन तार से बंधा, इंसान आज़ाद, अब जब से फ़ोन तार से अलग हुआ, इंसान फोन से बँध गया है।''

(1) **नीमोफोबिया नामक बीमारी** — मोबाइल की ब्लू लाइट के कारण लोगों को अनिद्रा की बीमारी, दूर

दृष्टिदोष आदि हो रहा है।

''जिंदगी की बस इतनी सी कहानी है, हमारी सेहत इतनी बिगड़ी नहीं थी, जितनी मोबाइल की कारस्तानी है।

(2) **भावनाएँ, अपनापन खत्म होना** – लोगों में एक–दूसरे तथा परिवार के लिए भावनाएँ खत्म हो रही हैं। एक मिनट के मैसेज ने चिट्ठियों के इंतज़ार व बैचेनी को खत्म कर दिया है।

''हर फैसले होते नहीं सिक्के उछाल के, ये दिल के मामले हैं ज़रा देखभाल के,

मोबाइल के दौर के लोगों को क्या पता, रखते थे कैसे खत पर कलेजा निकाल कर''

(3) **बच्चों पर प्रभाव**– बच्चों पर भी विभिन्न प्रकार के नकारात्मक प्रभाव पड़ रहे हैं जैसे कि वे अपनी उम्र से पहले ही वे चीज़ें जान लेते हैं जो उस उम्र में उनके लिए सही नहीं हैं तथा वे बड़ों जैसी ही बातें करने लग जाते हैं।

''**हे भगवान! इस जीवन में कुछ तो अच्छा रहने दिया जाए**

काश! बच्चों को अब बच्चा रहने दिया जाए।''

(4) **गोपनीयता का हनन**– विभिन्न प्रकार से गोपनीयता का हनन होता है। स्त्रियों के साथ विभिन्न प्रकार के अपराध भी बढ़ रहे हैं। बच्चों के साथ भी अपराध बढ़ रहे हैं क्योंकि उनको यह समझ नहीं कि किस तरह के फोटो डालनी चाहिए और किस तरह की नहीं।

(5) **समय की बर्बादी**– समय की बर्बादी बहुत अधिक बढ़ रही है। लोगों को जो चीज़ें उनके लिए उपयोगी नहीं हैं, समय बिताने के लिए मोबाइल पर अतिरिक्त समय व्यतीत करना ज्यादा अच्छा लगता है।

उपायः विभिन्न प्रकार के नकारात्मक प्रभावों को रोकने हेतु विभिन्न उपाय किए जा सकते हैं जो कि निम्न प्रकार के हैं:

डिजिटल व्रत– जिस प्रकार से पेट को सही रखने के लिए खाने के व्रत आवश्यक है उसी प्रकार मानसिक सेहत को सही रखने के लिए डिजिटल व्रत आवश्यक है जिसमें पूरा एक दिन विभिन्न इलैक्ट्रानिक उपकरणों से दूर रहना चाहिए।

मोबाइल का समयनुसार उपयोग– मोबाइल पर व्यतीत करने हेतु दिन में तीन घंटे पर्याप्त समय है जिसमें सभी प्रकार के ज़रूरी कामों को पूरा किया जाना चाहिए तथा उसके पश्चात् मोबाइल को हाथ नहीं लगाना चाहिए।

बच्चों पर ध्यान– माता–पिता को यह ध्यान देना चाहिए कि बच्चे किस तरह से इन्टरनेट का इस्तेमाल कर रहे हैं।

रात में दूरी– रात में मोबाइल की ब्लू लाइट ज़्यादा हानिकारक होती है तथा अनिद्रा के रोग का भी कारक होती है। अतः रात में मोबाइल का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

उपसंहार– हर चीज मर्यादा में इस्तेमाल की जाए तो वह वरदान साबित हो सकती है पर आवश्कता से अधिक इस्तेमाल करने पर वही वस्तु श्राप का रूप ले सकती है। अतः यह हम पर निर्भर करता है कि हम उसको किस प्रकार उपयोग कर रहे हैं। अतः यदि हम ऊपर दिए गए विभिन्न उपायों का इस्तेमाल करें तो मोबाइल के नकारात्मक प्रभावों को दूर सकते हैं। अतः मोबाइल हमारे जीवन में एक वरदान साबित हो जाएगा और विभिन्न सकारात्मक प्रभाव ही हमारे जीवन को प्रभावित करेंगे।

शिवांगी अवस्थी

छात्रा – एम टेक

विभाग– वी एल एस आई

हिन्दी पखवाड़े (2023) के दौरान स्वरचित कविता लेखन प्रतियोगिता में कर्मचारी वर्ग में द्वितीय स्थान प्राप्त कविता

मैने जाना........मैं क्या चाहता!

मैं नहीं कहता, जग मेरी दुर्धर गति के अनुकूल बने
मैं नहीं कहता, जीवन–मरु नंदन–कानन का फूल बने,
कांटा कठोर है, तीखा है, उसमें उसकी मर्यादा है,
मैं नहीं कहता, वह धटकर प्रांतर का ओछा फूल बने
मैं नहीं कहता, मुझे युद्ध में कहीं न तीखी चोट मिले
या प्यार करूँ तो मुझे प्राप्ति की ओट मिले!

मैं कहता हूँ, मैं बढ़ता हूँ, नभ की चोटी चढ़ता हूँ
कुचला जाकर भी धूली–सा आंधी और उमड़ता हूँ
मेरा जीवन ललकार बने, सफलता ही असि–धार बने
भाव सारा यह है कि उगते सूर्य की भांति सब कुछ
तप कर अंगार बने........ और हीरे के समान बने
जीवन यूँ निर्मल आकार बने..... सबके लिए आभार बने...
प्यार बने...... और नम्रता का आकार बने!

अंकित खुराना
वैज्ञानिक 'डी'
विभाग– आर्टिफिशियल इंटेलिजेन्स

हिन्दी पखवाड़े (2023) के दौरान स्वरचित कविता लेखन प्रतियोगिता में विद्यार्थी वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त कविता

विश्व गुरू की संज्ञा में

विश्व गुरु की संज्ञा में,
संसार को ज्ञान सिखाया है,
संसार को योग बताया है,
संसार को ध्यान बताया है।

विश्व गुरु की संज्ञा में,
हमने सबको अपनाया है,
सबको यह प्रेम समझाया है
'वसुधैव कुटुम्बकम' का पाठ पढ़ाया है।

विश्व गुरु की संज्ञा में,
अहिंसा को अपनाया है,
हर जन को अपनाया है,
अखण्डता का नया रूप दिखलाया है।

विश्व गुरु की संज्ञा में,
अंतरिक्ष को हमने लांघा है,
चन्द्रमा को हमने चूमा है,
मंगल को हमने मापा है।

विश्व गुरू की संज्ञा में,
जन–जन को ये समझाया है,
प्रेम का मार्ग दिखलाया है,
एक हैं हम ये बतलाया है,
विश्व गुरु की संज्ञा में।।

ऋशि कुमार सोनी
छात्र – एम टेक
विभाग –आर्टिफिशियल इंटेलिजेन्स

हिन्दी पखवाड़े 2023 के दौरान स्वरचित कविता लेखन प्रतियोगिता में विद्यार्थी वर्ग में द्वितीय स्थान प्राप्त कविता

हमारा सी–डैक

1989 में सी–डैक मोहाली अस्तित्व में आया,
तकनीक के तीन दशक, बिना किसी झगड़े के लाया।

स्वास्थ्य, साइबर सुरक्षा की ताकत,
चीज़ों को आसान बनाने के लिए सॉफ्टवेयर बनाया।

ए आई हमारा खेल है, रचनात्मकता हम पोषित करते,
इंसानों के लिए डिज़ाइन करना, हर ज़रूरत को पूरा करना।
ई–संजीवनी को घर–घर पहुचाते, एग्री–इलैक्ट्रानिक्स में हम बेल उगाते।

एल.टॉप (ELTOP) के घर में हम गर्व से रहते,
एक भव्य इमारत जहाँ हम काम करते।
जनता, स्कूलों, एजेंसियों की भी मदद करते,
सी–डैक के समाधान नवीनता लाते।
तीस से अधिक वर्षों से, हमने मार्ग प्रशस्त किया है,
तकनीक और प्रगति में, हमने ज़ोर दिया है।''

विकास पाण्डेय
प्रशिक्षुः डबल्यु बी एल

वीर तुम कहलाओगे, जवान तुम कहलाओगे

जलना होगा, तपना होगा,
आगे तुमको बढ़ना होगा
वीर तुम कहलाओगे, जवान तुम कहलाओगे
आँधियों में, तूफ़ानों में
सरहद की ठंडी हवाओं में,
सिंह के समान खड़े होना होगा
लड़ना होगा, बढ़ना होगा।
गोलियों की प्रचंड–धारा को,
बारूद की बोछारों को
सहना होगा, लहू तुम्हारा बहना होगा।
जलना होगा, तपना होगा
आगे तुमको बढ़ना होगा
वीर तुम कहलाओगे, जवान तुम कहलाओगे।
युद्ध भूमि की बेला में, मौत भी आए
माँ भारती के लाल हो तुम
उनको तुम्हें बतलाना होगा।
युद्ध भूमि में साहस दिखाना होगा,
तिरंगा तुम्हें लहराना होगा।
जलना होगा, तपना होगा
आगे तुमको बढ़ना होगा
वीर तुम कहलाओगे, जवान तुम कहलाओगे।।
जय–हिन्द, जय–भारत

सुनील कुमार शर्मा
परियोजना अभियन्ता
विभाग – एस.टी.डी

राष्ट्रीय हिन्दी दिवस

हिन्दी हमारी आन है, हिन्दी हमारी शान है
हिन्दी हमारा गौरव है, हिन्दी ही सम्मान है।
जिस भाषा के शब्दों को, माँ की गोदी से सीखा है
तुतलाहट से धारा प्रवाह तक, हिन्दी को हमने देखा है।
असीम हर्ष वेदना को जैसे, हिन्दी ही दर्शाती है
बच्चों से लेकर बूढ़ों तक, हिन्दी ही गले लगाती है।
हम समस्त देशवासियों का, हिन्दी हृदय का हार है
हिन्दी हमारी आन है, हिन्दी हमारी शान है।
हिन्दी हमारी गौरव है, हिन्दी ही सम्मान है।।

आज़ादी आंदोलन में, प्रमुख संवाहिका बनी हिन्दी।
क्रांतिकारियों के हृदय में, चेतना की चिंगारी बनी हिन्दी
जन–मन के हृदय में, चेतना का विस्तार की हिन्दी।
गुलामी पटल पर, स्वतंत्रता की आगाज की हिन्दी
सितम्बर चौदह को, राजभाषा पद पर आसीन हुई हिन्दी।
भारत देश की, अस्मिता की पहचान है हिन्दी
हिन्दी हमारे देश की शोभा, हिन्दी ही अभिमान है।
हिन्दी हमारी आन है, हिन्दी हमारी शान है
हिन्दी हमारा गौरव है, हिन्दी ही सम्मान है।।

सुधांशु यादव
छात्रः एम.टेक
विभाग– वी एल एस आई

माघ की सर्दी में

माघ की सर्दी में
किसान की रातें,
मुझे दिखते हैं
टपकती ओस से भीगे कपड़े,
तार की नोक से फटे कपड़े,
भीगा जूता और जुराबें
गहरा अंधेरा, कोहरे की चादर ।
टॉर्च की रोशनी से,
कुछ नही दिखाई देता है।
बस सुनायी देती है,
जानवरों के पैरों की आवाज़ ।
भूख से मजबूर है किसान
भूख से मजबूर है जानवर
फूड चैन पे सबसे ऊपर बैठे हम
भूख से मजबूर हैं।
इतनी आसान सी दिखने वाली
यह व्यवस्था कितनी जटिल है।
बहुत ही द्वन्द्व भरा है ये चुनाव
कि किसकी भूख बड़ी है?
खैर हम इतना क्यों ही सोचें
कंबल की गर्मी हमारे लिये काफी है।

अभिलाष
भ्राता–श्री यशार्थ सिंह

एकल उपयोगी प्लास्टिक का उन्मूलन

प्लास्टिक का इतिहास लगभग 150 साल पुराना है। अलेक्जेंडर पार्क्स ने 1855 में पहले प्लास्टिक पार्कसीन का आविष्कार किया था। उस समय, उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि अगर मनुष्य इसका ठीक से उपयोग नहीं करेगा तो उनका आविष्कार पर्यावरण के लिए समस्या बन जाएगा। एकल उपयोगी प्लास्टिक का आविष्कार 1933 में इंग्लैंड के नॉर्विच में एक रसायनज्ञ द्वारा दुर्घटनावश हुआ था। जब हम एकल उपयोग वाले प्लास्टिक पॉलिथीन के बारे में सोचते हैं तो यह हमें आश्चर्यचकित करता है कि कैसे इसका उपयोग तेज़ी से बढ़ रहा है, यहाँ तक कि इसके आविष्कार को 100 साल भी नहीं हुए हैं।

वास्तव में एकल उपयोगी प्लास्टिक क्या है? प्लास्टिक की ऐसी वस्तुएं जिन्हें केवल एक बार इस्तेमाल करने के बाद फेंक दिया जाता है। आमतौर पर इनका उपयोग पैकेजिंग में किया जाता है। इनमें किराना बैग, खाद्य पैकेजिंग, प्लास्टिक की बोतलें, प्लास्टिक के ढक्कन, चम्मच, पाउच, गुब्बारों की स्टिक, थर्माकोल के सजावटी सामान, गिलास, सिगरेट और तम्बाकू पैकेट, 100 माइक्रोन से कम मोटाई वाले प्लास्टिक, मिठाई बॉक्स में यूज होने वाली क्लिंग रैप्सस्ट्रॉ और स्टिरर, प्लास्टिक के कंटेनर, कप और कटलरी का सामान और चिकित्सा उत्पाद शामिल हैं। अधिकांश 10 प्रतिशत प्लास्टिक नष्ट होने वाले या बायोडिग्रेडेबल नहीं होते हैं। इसके बजाय वे धीरे–धीरे छोटे टुकड़ों में टूट जाते हैं जिन्हें माइक्रोप्लास्टिक कहा जाता है। हमने देखा है कि कई लोग प्राकृतिक पानी और स्टील या कांच के बर्तन उपयोग करने से बचने के लिए या समय बचाने के उद्देश्य से शादी, पार्टियों, सम्मेलनों या किसी अन्य बैठक में पीने की बोतलें, प्लेट्स और खाद्य पदार्थ या लगभग सभी सामान एकल उपयोगी प्लास्टिक का उपयोग करते है। एकल उपयोग प्लास्टिक का उपयोग केवल एक बार किया जाता है और पुनर्चक्रण उद्देश्य के लिए कचरे के रूप में फेंक दिया जाता है।

चिकित्सा विज्ञान के उपकरण जैसे कि सिरिंज, एप्लिकेटर, ड्रग्स टेस्ट, बैंडेज और रैप्स में कुछ हद तक पुनः उपयोग किया जा सकता है इसके अलावा, बचे हुए कचरे का उपयोग जमीन भराव में कर सकते है लेकिन यह एक अच्छा विकल्प नहीं है क्योंकि नॉन – बायोडिग्रेडेबल गुणों के कारण प्लास्टिक जब छोटे कणों में टूट जाता है और मिट्टी के साथ मिश्रण होता है, लेकिन यह विघटित नहीं होता है और 1000 वर्षों तक मिट्टी और पानी में रहता है और जहरीले रसायनों को छोड़ता है जो जानवरों और मनुष्यों द्वारा खाए जाने वाले पौधों में उभरते हैं और यह रक्त प्रवाह में चले जाते हैं और गैर– पचने वाले कारण से विभिन्न प्रकार की रुकावट और बीमारियां पैदा करते है। अपशिष्ट प्लास्टिक के उपयोग का एक अन्य तरीका जलाना है, लेकिन यह प्लास्टिक प्रदूषण के साथ–साथ पर्यावरण में विषाक्त गैसों को बढ़ाकर वायु प्रदूषण को बढ़ाता है जिससे ग्लोबल वार्मिंग और दूसरी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। एक और तरीका समुद्र में फेंक सकते हैं लेकिन यह समुद्र प्रदूषण को बढ़ाता है । अब तक 10–20 मिलियन कचरा

समुद्र में जा चुका है। समुद्र में प्लास्टिक की थैलियों के कारण हर साल 0.1 मिलियन समुद्री जीव मारे जाते हैं। कुछ समाचारों के अनुसार संयुक्त राज्य अमेरिका में महान झीलों में पृथ्वी पर ताज़े पानी का 1/5 हिस्सा पाया जाता था लेकिन अब इसमें 80 प्रतिशत अपशिष्ट प्लास्टिक पाया गया है। रिपोर्ट में पाया गया कि भारत एकल उपयोग वाले प्लास्टिक अपशिष्ट उत्पादन के शीर्ष 100 देशों में शामिल है– रैंक 94 (शीर्ष तीन सिंगापुर, ऑस्ट्रेलिया और ओमान) हैं।

प्लास्टिक सूप फाउंडेशन के मुताबिक दुनिया भर में हर सेकंड 15,000 प्लास्टिक की बोतलें बिकती हैं। कैच (CATCH) फाउंडेशन (एनजीओ) के अनुसार (यह फाउंडेशन सिंगल यूज प्लास्टिक को बदलने के लिए कुछ स्मार्ट बैग डिज़ाइन करता है) प्रत्येक भारतीय हर महीने लगभग 1 किलो प्लास्टिक का उपयोग करता है जो पूरे देश में हर दिन 26000 टन प्लास्टिक के बराबर है। हमने शहरी क्षेत्रों में भी देखा है कि ज़्यादातर बरसात के मौसम में शहर का पानी कहीं अवरुद्ध हो जाता है और प्लास्टिक के कारण बाढ़ का कारण बन जाता है। प्लास्टिक के इन खतरनाक प्रभावों के कारण पूरी दुनिया ने प्लास्टिक को खत्म करने का फैसला कर लिया है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं वर्षगांठ पर भारत सरकार 2 अक्टूबर, 2019 को स्वच्छ भारत मिशन के तहत 2022 तक भारत को एकल उपयोग वाले प्लास्टिक से मुक्त करने के लिए देश भर में एकल उपयोग वाले प्लास्टिक के उपयोग को रोकने के लिए बहु–मंत्रिस्तरीय योजना का नेतृत्व किया था, जो कि कुछ हद तक सफल भी रहा लेकिन जब तक एक सख्त कानून नहीं होगा और प्रत्येक नागरिक अपना उत्तरदायित्व नहीं निभाएगा तब तक इसकी समस्या से निजात नहीं मिलेगी।

इसको पाँच चरणों में कार्यान्वित किया गया, जैसे कि पहले चरण में एकल उपयोग वाले प्लास्टिक और पृथ्वी और उसके जीवों पर इसके प्रभावों के बारे में जागरूकता, दूसरे चरण में प्लास्टिक एकत्र करना और अंतिम पुनर्चक्रण में एकल उपयोग वाले प्लास्टिक उपयोग करने पर पर जुर्माना भी लगाया जायेगा। सबसे पहले पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने एकल उपयोग वाले प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाया और कागज और अन्य पुनर्नवीनीकरण सामग्री जैसे अन्य विकल्प चुनने को बोला है। दूसरा कदम राष्ट्रीय राजमार्ग मंत्रालय और भारत प्राधिकरण द्वारा उठाया गया। प्लास्टिक एकत्र करके इसका उपयोग करके सड़क निर्माण में उपयोग किया क्योंकि यह चरम मौसम की स्थिति के खिलाफ टिकाऊ है और लागत प्रभावी भी है।

रेल मंत्रालय 2 अक्टूबर से बड़े पैमाने पर श्रमदान का आयोजन कर रहा है, क्योंकि रेल यात्रा में पीने के पानी की बोतलों की खपत सबसे अधिक होती है। खाद्य और उपभोक्ता मंत्रालय ने डेयरी उत्पाद और अन्य फैक्टरी उत्पादों की पैकेजिंग में प्लास्टिक के उपयोग पर प्रतिबंध लगाया, विशेष रूप से भारतीय खाद्य निगम और अन्य सार्वजनिक उपक्रमों द्वारा पर्यटन मंत्रालय ने पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों द्वारा एक बार उपयोग किए जाने वाले प्लास्टिक को रोकने के लिए भी कदम उठाया है और यात्रा में उनके द्वारा कुछ वैकल्पिक उपाय किए गए हैं जैसे कि पर्यटकों द्वारा होटल या अन्य स्थानों पर कागज या पारंपरिक उपकरणों का उपयोग किया जाना चाहिए ताकि एक बार उपयोग

किए जाने वाले प्लास्टिक से बचा जा सके। कपड़ा मंत्रालय भी एकल उपयोग वाले प्लास्टिक को रोकने के लिए कुछ कदम उठा रहा है। वैश्विक स्तर पर भी 127 से अधिक देशों ने एकल उपयोग वाले प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगा दिया है। संयुक्त राष्ट्र के पर्यावरण प्रमुख एरिक सोलहेम ने कहा था कि प्लास्टिक प्रदूषण दुनिया के सबसे बड़े खतरों में से एक है और देश प्लास्टिक कचरे के बड़े ढेर से निपटने के लिए एक बेहतर प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन और निपटान योजना के साथ आए हैं और उन्होंने स्ट्रॉ, चाकू, फोर्क और कॉटन बड्स जैसी प्लास्टिक वस्तुओं को समाप्त कर दिया है। चीन ने 2025 तक द्वीप प्रांत में टाइलों पर प्रतिबंध लगा दिया है और संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन से प्लास्टिक के आयात पर भी प्रतिबंध लगा दिया है। अमेज़ॅन इंक. ने जून 2020 से प्लास्टिक के बजाय उत्पाद की पैकेजिंग में एकल उपयोग वाले प्लास्टिक को रोकने के लिए वे कागज़ के कुशन का उपयोग करते हैं

पेप्सी, कोका–कोला और अमूल जैसे बड़े पेय निर्माता कम्पनीज़ ने काँच की बोतलों का उपयोग करने का निर्णय लिया है जो ग्राहकों द्वारा वापस भी लौटाए जा सके। दुग्ध उद्योग कुछ विशेष प्रकार के पॉलिएस्टर फिलामेंट यार्न (पीएफवाई) से बने कुछ अलग प्रकार के दूध के पाउच बना रहा है, जो उच्च चिपचिपाहट वाले पॉलिमर यार्न का उपयोग करता है, जिसे रिसाइकल किया जा सकता है और इसे 45–50 बार इस्तेमाल किया जा सकता है, जिससे दूध की कीमत भी कम होगी और ग्राहकों के साथ–साथ कंपनी के लिए भी फायदेमंद होगा। प्रत्येक नागरिक को जूट, कपड़ा और कागज के थैलों का उपयोग करना चाहिए। वैसे भी पैकेज्ड खाद्य पदार्थ स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते है । कुछ ग्रामीण परिवेश में आज भी लोग ज़्यादातर बाज़ार से वस्तुएँ लाने के लिए घर से थैला ले जाते है और शादियों या किसी दूसरे समारोह में प्लास्टिक उपयोग नही होता । कुछ लोग बड़े स्तर पर इसके लिए काम भी कर रहे रहे हैं। इसके अलावा अपनी पृथ्वी के कल्याण के लिए एकल उपयोगी प्लास्टिक का उन्मूलन करना ज़रूरी है। अगर एकल उपयोगी प्लास्टिक के दूसरे विकल्प के बारे में सोचें तो सरकार को इसके और दूसरे विकल्प के लिए अनुसन्धान को बढ़ावा देना चाहिए जिससे दूसरे विकल्प उपयोग किये जा सकें और एकल उपयोगी प्लास्टिक के उपयोग को बंद करने के सख्त कानून, मुहिम, प्रतियोगिताएँ, विज्ञापन और प्रत्येक संभव तरीको को अमल में लाना चाहिए ताकि जल्द से जल्द एकल उपयोगी प्लास्टिक के उपयोग का उन्मूलन किया जा सके। अधिसूचना के अनुसार, यदि लोग प्रतिबंध का उल्लंघन करते पाए गए तो उन पर पर्यावरण अधिनियम 1986 के तहत जुर्माना लगाया जा सकता है, जिसके तहत पाँच साल तक की जेल या एक लाख रुपये तक का जुर्माना या दोनों का प्रावधान है।

रामस्वरूप

ज्ञान सहयोगी

विभाग – साइबर सुरक्षा प्रौद्योगिकी विभाग

मेरी प्यारी हिन्दी

भारत माँ के बाल पर जो प्यारी बिंदी है,
हिन्दी है, हिन्दी है, मेरी प्यारी हिन्दी है।
हिन्दी मेरी धरती है, हिन्दी है आकाश
हिन्दी मेरी धड़कन है, हिन्दी मेरी श्वास।
नित्य गति में और प्रगति में, रहती जिसकी चाह,
नए प्रयोगों सहित बनाती रहती नूतन राह।
जो जन–जन में, जो जन–मन में करती प्रति क्षण वास
हिन्दी मेरी धरती है, हिन्दी है आकाश।
नए क्षितिज पर इसका सुर धनु सा विस्तार,
इसके नव आयामों पर अब सम्मोहित संसार।
मंगलमय भविष्य का जो फैला रही उजास,
हिन्दी मेरी धरती है, हिन्दी है आकाश
माँ माता, माँ मातृभूमि है, माँ अपनी भाषा है,
माँ है जीवन स्त्रोत, वह जीवन की आशा है।
अर्पित कर सर्वस्व आज हम, रच दें फिर इतिहास,
हिन्दी मेरी धरती है, हिन्दी है आकाश।

येतिका भल्ला
समन्वयक
विभाग – एम एम जी

मैं और मेरी माँ

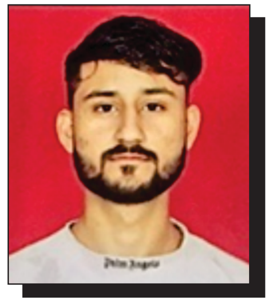

छोटा था तो आँचल में बैठा रहता था।
पर अब मजबूरन दूर माँ से रहने लगा हूँ।
पहले रोता था मैं हर छोटी बात पर,
पर अब हँस कर ''सब ठीक है'' कहने लगा हूँ।
बस मेरी माँ ही जानती है हाल मेरा मैं
क्यूँ इतना चुप रहने लगा हूँ।

दूर रहकर भी वो मुझे याद करती है,
मेरी अच्छी सेहत की खुदा से फरियाद करती है।
खुद खाती नहीं एक भी निवाला,
पर मेरी भूख का आज भी ख्याल रखती है।

मैं लगता हूँ अपनी माँ को हीरे जैसा,
बेशक लोगों को मैं खोटा लगता हूँ।
दुनिया के लिए तो मैं बड़ा हो गया हूँ,
पर अपनी माँ को मैं आज कोई बच्चा छोटा लगता हूँ।

बस इतना कहता हूँ अंत में कि कोई
मुझे मेरी माँ से जुदा नहीं कर सकता,
क्या लिखूं और मैं अपनी माँ के बारे में,
उसका मुकाबला तो खुद खुदा भी नहीं कर सकता।

अरश पटियाल
छात्र : एम.टेक
विभाग– ए. आई

कृष्ण, राधा, मीरा

एक मीरा की अरदास थी
राधा को भी कुछ आस थी
रूक्मणी को भी वही भाया,
कृष्ण प्रेम कौनो समझ न पाया।

मीरा थी एक भक्त दीवानी,
कृष्ण–कृष्ण कर जग को ना जानी,
कृष्ण को ही अपना जग बनाया,
कृष्ण प्रेम कौनो समझ ना पाया।

राधा ने एक आस लगाई,
सारे बंधन तोड़ दौड़ी चली आई,
मानव रूपी नारायण उसे भी ना मिल पाया,
कृष्ण प्रेम कौनो समझ ना पाया।

रूक्मणी संग ब्याह रचाया,
सात संगनी संग और ले आया,
हृदय से राधा को कभी निकाल न पाया,
कृष्ण प्रेम कौनो समझ ना पाया।

शुभम्
परियोजना अभियन्ता
विभाग–साइबर सुरक्षा

जीवन भी एक गणित है

गणित को समझा तो जीवन भी समझ आया
जीवन कहूँ या गणित दोनो मे फर्क कहीं नज़र नहीं आया।

जीवन के उतार–चढ़ाव बिलकुल गणित के जोड़ घटा लगे
और दुःख–सुख, गुणा भाग लगे ।

कभी इंटीग्रेशन सा बड़ा लगा जीवन
कभी डिफरेंशियल सा छोटा लगा जीवन।

कभी कोष्ठक में रहने का मन करता
तो कभी कोष्ठक से बाहर निकलने का मन करता ।

हर संख्या से अपना कुछ दोस्त जैसा नाता है
बिना संख्या के तो गणित भी अपूर्ण हो जाता है ।

प्यार का गणित लगता कुछ ऐसे,
माना x=y जैसे ।

जीवन की इस प्रायिकता में कुछ भी हो सकता है
हेड आयेगा या टेल कुछ भी संभव हो सकता है।

जिओ अपनी ज़िंदगी को कुछ ऐसे
प्राइम नम्बर हो तुम जैसे ।

सोनिया
परियोजना अभियन्ता
विभाग–साइबर सुरक्षा

सी डैक
CDAC

प्रगत संगणन विकास केंद्र (सी-डैक)
इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय की वैज्ञानिक संस्था, भारत सरकार
ए-34,औद्योगिक क्षेत्र, फेज-8 मोहाली-160071
टेलीफोन नंबर 0172-2237052-55 फैक्स नंबर 0172-2237050

CENTRE FOR DEVELOPMENT OF ADVANCED COMPUTING
A Scientific Society of the Ministry of Communications & Information Technology, Govt. of India
A-34, Phase VIII, Industrial Area, Mohali - 160 071, (near Chandigarh) Punjab, INDIA
Phone: +91-172-2237052-55 Fax: +91-172-2237050

कवर डिजाइन : सी–डैक मोहाली , 2024